प्रागैतिहासिक काल
(PRE-HISTORICAL AGE)

प्रागैतिहासिक शाब्दिक अर्थ (प्राक् + इतिहास) इतिहास के पूर्व के युग से है। उपर्युक्त दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास में पाषाणकालीन संस्कृति प्रागैतिहासिक काल के तहत आती है। सिन्धु घाटी एवं वैदिक सभ्यताएँ आद्य-इतिहास के तहत आती हैं एवं ईसा पूर्व छठी शताब्दी से ऐतिहासिक काल प्रारम्भ हो जाता है, परन्तु इस विभाजन को लेकर इतिहासकारों में मतभेद हैं। कुछ इतिहासकार ऐतिहासिक काल के पूर्व के काल को ही प्रागैतिहासिक के तहत रखते हैं।

पाषाण काल
(PALAEOLITHIC AGE)

आजीविका के साधनों के प्राप्ति हेतु उपयोग में लाये गये हथियारों में निर्माण में प्रयुक्त द्रव्यों के आधार पर पुरातत्ववेत्ताओं ने मानव सभ्यता के आरम्भिक इतिहास को **पाषण काल** तथा **धातुकाल** में बाँटा है। अध्ययन की सुविधा के लिये उक्त युगों को पुन: लघुत्तर युगों में विभाजित किया गया है। विद्वानों का विचार है कि आरम्भिक मानव समाज का उदय और विकास अतिनूतन काल (Pliocene epoch) में हुआ। चूँकि प्रागैतिहासिक काल मानव कथा की लगभग 95% विशाल कालावधि में रहा, अत: प्रागैतिहासिक सभ्यता को मानव समाज द्वारा प्रयुक्त सामग्री के आधार पर स्थूल रूप से तीन भागों में निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया—

(1) पूर्व पाषाण काल (Palaeolithic Age)—25 लाख से 10 हजार वर्ष ई. पू.।

(2) मध्य पाषाण काल (Mesolithic Age)—10 से 5 हजार वर्ष ई. पू.।

(3) नव पाषाण काल (Neolithic Age)—7 हजार से 1000 वर्ष ई. पू.।

(1) पूर्व पाषाण काल (Palaeolithic Age)

पृथ्वी पर पूर्व पाषाण काल 25 लाख ई. पू. से 10 हजार वर्ष ई. पू. तक रहा। पूर्व पाषाण काल की अवधि अत्यधिक लम्बी होने के कारण अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से 1870 ई. में लार्टेट (Lartet) महोदय ने इसे तीन विशिष्ट अवधियों में निम्नानुसार विभाजित किया—

(i) निम्न पुरापाषाण काल (Lower Palaeolithic epoch); यह काल 25 लाख से 1 लाख वर्ष ई. पू. तक रहा।

(ii) मध्य पुरापाषाण काल (Middle Palaeolithic epoch); यह काल 1 लाख से 40 हजार वर्ष ई. पू. तक रहा।

(iii) उच्च/स्तर पुरापाषाण काल (Upper Palaeolithic epoch); यह काल 40 हजार से 10 हजार वर्ष ई. पू. तक रहा।

(i) **निम्न पुरापाषाण काल** (Lower Palaeolithic Age)—मानव सम प्राणियों का उद्‌भव सर्वप्रथम किस देश में हुआ ? इस प्रश्न पर विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ विद्वान इस प्रारम्भिक उद्‌भव का श्रेय अफ्रीका को देते हैं। **रेमण्ड डार्ट** महोदय ने 1924 ई. में दक्षिण अफ्रीका के वेचुआनालैण्ड की टांग घाटी से **आस्ट्रेलोपिथिकस अफ्रीकेनस** अर्थात् दक्षिण अफ्रीका कपि मानव की खोज की। इसका काल 10 लाख ई. पू. निर्धारित किया गया।

भारतीय पाषाणकालीन संस्कृति (Palaeolithic Culture of India)

भारतीय सन्दर्भ में पाषाणकालीन सभ्यता का अनुसन्धान 1863 ई. में प्रारम्भ हुआ, जब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के विद्वान **राबर्ट ब्रूसफुट ने पल्लवरम (मद्रास)** नामक स्थान से पूर्व-पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त किया। उसके बाद विलियम किंग, ब्राउन, काकबर्न, सी. एल. कार्लाइल आदि विद्वानों ने विभिन्न क्षेत्रों से कई पूर्व-पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त किये। इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य 1935 ई. में **डी. टेरा एवं पीटरसन** द्वारा किया गया। इन विद्वानों के निर्देशन में एक कैम्ब्रिज अभियान दल ने भारत की शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में बसे पोतवार के पठारी भाग का व्यापक सर्वेक्षण किया।

विद्वानों का विचार है कि इस सभ्यता का उदय और विकास 'अतिनूतन काल' (Pliocene age) में हुआ। वस्तुत: 4 अरब 70 करोड़ वर्ष पुरानी पृथ्वी की चार अवस्थाओं में चौथी और अन्तिम अवस्था को अग्र दो भागों में बाँटा गया है—

1. अतिनूतन काल (10 लाख से 10 हजार वर्ष पूर्व),
2. आद्यतन युग (आज से 10 हजार वर्ष पूर्व)।

पूर्व-पाषाणकालीन संस्कृति (क्रमबद्ध भौगोलिक वितरण) (Palaeolithic Culture/Systematic Geographical Distribution)

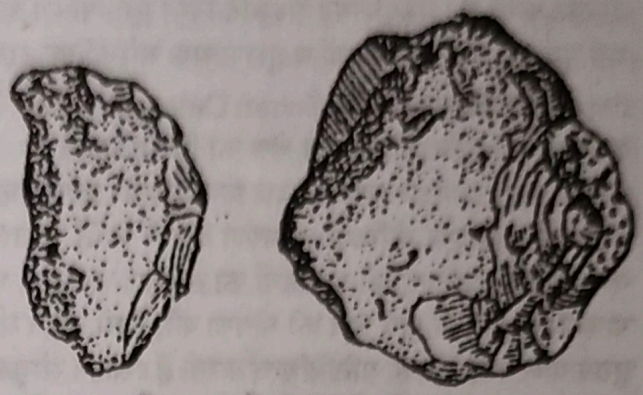

चित्र—प्रारम्भिक प्रस्तर-उपकरण

भारतीय प्रागैतिहासिक काल के जन्मदाता **राबर्ट ब्रुसफुट** ने 1863 ई. से उत्तरी गुजरात से लेकर बिहार, राजस्थान एवं मद्रास तक प्रागैतिहासिक खोज में लगभग 43 वर्ष व्यतीत किये। 1865 ई. में सर्वश्री बाहर्न महोदय को हैदराबाद के निकट सुलेमानी पत्थर (Agate) से निर्मित उपकरण प्राप्त हुए। 1867 ई. में **सर्वश्री ब्लेनफोर्ड** महोदय ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि भारत में मानव जाति यूरोप से पहले से निवासरत थी। 19वीं शताब्दी के अन्त तक तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश एवं आन्ध्र प्रदेश आदि अनेकानेक क्षेत्रों से पुरा-पाषाणकालीन संस्कृति के अनेक केन्द्र ढूँढ़ निकाले गये। पुरा-पाषाणकालीन संस्कृति को मानव द्वारा प्रयुक्त होने वाले उपकरणों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार तीन वर्गों में बाँटा गया है—

(अ) निम्न पुरा-पाषाणकालीन संस्कृति (Lower Palaeolithic Culture)—भारत में मानव के प्राचीनतम अस्तित्व का संकेत द्वितीय हिमावर्तन (ग्लेसिएशन एज) काल की परतों से प्राप्त पत्थर के उपकरणों से मिलता है जिसका काल 2,50,000 ई. पूर्व बताया जाता है। अधिकांश हिम युग आरम्भिक पुरा-पाषाण युग में ही व्यतीत हुआ। इसका प्रमाण है कुल्हाड़ी या हस्त-कुठार (हैण्ड-एक्स), विदारणी (क्लीवर) और गंड़ासा (खंडक) का उपयोग भारत के विभिन्न भागों से निम्न पुरा-पाषाणकालीन संस्कृति के प्राप्त उपकरणों के आधार पर इसे दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(i) **चापर-चापिंग पेबुल संस्कृति** (Chaper-Chaping Pebul Culture)—इस संस्कृति के उपकरण सर्वप्रथम पंजाब की सोहन नदी घाटी से प्राप्त हुए, अत: इसे सोहन संस्कृति की संज्ञा दी गयी है। पेबुल पत्थर के उन टुकड़ों को कहा जाता है जिनके किनारे पानी के बहाव में रगड़ खाकर चिकने और सपाट हो जाते हैं, अत: इनका आधार गोल-मटोल होता है। 'चापर' बड़े आकार के उस उपकरण को कहते हैं जो पेबुल से बनाया जाता है। चापर एवं पेबुल उपकरणों के प्राप्ति के आधार पर ही इसे चापर-चापिंग पेबुल संस्कृति नाम दिया गया है।

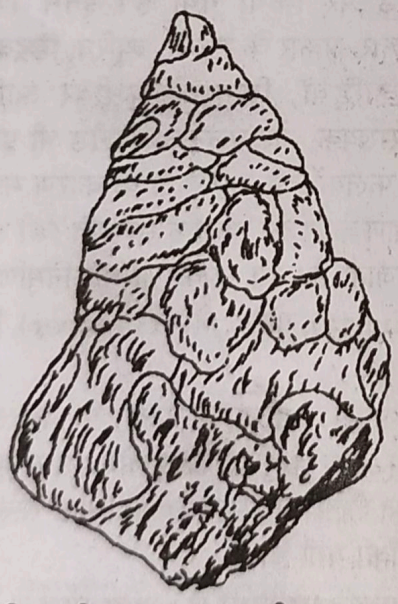

चित्र—निम्न पुरापाषाण युगीन पत्थर की कुल्हाड़ी

(ii) **हैण्ड एक्स संस्कृति** (Hand Axe Culture)—मद्रास के समीप बदमदुरै एवं अत्तिरपक्कम आदि स्थानों से इस संस्कृति के उपकरण प्राप्त हुए हैं। इन्हें साधारण पत्थरों के कोर एव फ्लैक प्रणाली से निर्मित किया गया है। क्लीवर एवं स्क्रेपर आदि भी इसी संस्कृति के अन्य उपकरण हैं।

19वीं शताब्दी के अन्त तक भारत के विभिन्न भागों से पुरा-पाषाणयुगीन संस्कृति के अनेक केन्द्र खोजे जा चुके हैं उनमें प्रमुख हैं—

(क) एश्यूलियन संस्कृति (Acheulian Culture)—भारत में अति प्राचीन पाषाण उपकरण एश्यूलियन संस्कृति के प्राप्त हुए हैं। एश्यूलियन संस्कृति के साक्ष्य गंगा के मैदान, उत्तरी-पूर्वी भारत व भारत के कुछ पश्चिमी क्षेत्रों को छोड़कर लगभग सभी भू-भागों में देखने को मिलते हैं। गुफाओं तथा पठारी भागों में भी इस संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं। उपलब्ध साक्ष्यों

में हस्त कुल्हाड़ियाँ, विदारक, पापड़ी पत्थर उपकरण मुख्य हैं। सम्भवतः उक्त उपकरणों का उपयोग आखेट करने व कन्दमूल जड़ों को एकत्रित करने में किया जाता होगा। इससे निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि एश्यूलियन संस्कृति के निर्माता आखेट व खाद्य संग्रह कर जीविकोपार्जन करते होंगे। उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर यह भी संकेत मिलता है कि इस संस्कृति के निर्माता हाथी, गाय-बैल, दरियायी घोड़ा, सुअर, हिरन आदि पशुओं का आखेट करते थे। एश्यूलियन संस्कृति निम्न पुरा-पाषण काल की एक प्रमुख संस्कृति है जो कि लगभग 5 लाख वर्ष पूर्व की भूगर्भिक साक्ष्यों व तुलनात्मक सांस्कृतिक अध्ययनों के आधार पर आँकी गयी है।

(ख) सोहन संस्कृति (Sohan Culture)—सोहन, सिन्धु नदी की एक छोटी सहायक नदी है। प्रागैतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से इस नदी क्षेत्र का विशेष महत्व है। 1928 ई. में **डी. एन. वाडिया महोदय** ने इस क्षेत्र में सर्वप्रथम पूर्व-पाषाण का उपकरण प्राप्त किया। तत्पश्चात् सन् 1925 ई. में **डी-टैरा एवं पीटरसन** महोदय के नेतृत्व में आये एक कैम्ब्रिज अभियान दल ने भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में मुख्यतः पंजाब, हिमाचल प्रदेश, कश्मीर व शिवालिक की पहाड़ियों का सर्वेक्षण कर उत्तर भारत में एश्यूलियन संस्कृति के समकालीन एक नवीन पाषाण संस्कृति के पाये जाने की घोषणा की, जिसे सोहन संस्कृति के नाम से जाना जाता है। यह संस्कृति भी निम्न पुरापाषाण काल का ही प्रतिनिधित्व करती है। सोहन संस्कृति की सर्वप्रमुख विशेषता पेबुल के 'चापर' उपकरणों के साथ-साथ हस्ते कुल्हाड़ियाँ, विदारक व खुरचन यन्त्र आदि की प्राप्ति है। सम्भवतः इस प्रकार के उपकरणों की उपलब्धि विश्व के अन्य पुरा-स्थलों से देखने को नहीं मिलती।

निम्न पुरापाषाण काल के प्राप्त उपकरण मुख्यतः द्वितीय हिम युग के हैं। इस अवधि में जलवायु में नमी कम हो गयी थी। जलवायु शुष्क होने के कारण सोहन घाटी में अनेक कगार या वेदिकाएँ (जलवायु शुष्क होने पर जब नदियों का पानी घट जाता है या दिशा बदल देता है। तब उनके किनारों पर ढालू जमीन निकल आती है। इसी को कगार व वेदिका कहा जाता है) बन गयीं।

निम्न पुरापाषाण युगीन मानव में सामान्यतः जल स्रोतों के नजदीक प्रवास की प्रवृत्ति देखी जाती है। इन्होंने पाषाण उपकरणों का प्रयोग आखेट, आत्मरक्षा, कन्दमूल एकत्रित करने में प्रमुख रूप से किया। यह मानव वस्त्र एवं लिपि ज्ञान से पूर्णतः अनभिज्ञ था। इस समय मानव पूर्णतः प्रकृति आश्रित था व छोटे-छोटे समूहों में निवास करता था।